Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 1 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

तुलसी के राम और कबीर के राम में अन्तर

डॉ. अनीता रानी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग।

सनातन धर्म महिला महाविद्यालय नरवाना (जींद)

dr.anita.chhabra@gmail.com

सार

हिन्दी भक्तिकाव्य में 'राम' केवल एक धार्मिक नाम नहीं है, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चेतना, लोक-विश्वास, सामाजिक व्यवस्था और आत्मानुभूति का व्यापक प्रतीक है। तुलसीदास और कबीर दोनों के काव्य में राम का अत्यन्त महत्त्व है, परन्तु दोनों की राम-संकल्पना समान नहीं है। तुलसी के राम सगुण-साकार, अवतारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, भक्तवत्सल और लोकधर्म के रक्षक हैं। वे कथा, चरित्र, नीति, करुणा और धर्म के माध्यम से समाज को आदर्श जीवन-पद्धति प्रदान करते हैं। इसके विपरीत कबीर के राम निर्गुण, निराकार, अजन्मा, सर्वव्यापक और आत्मानुभूति के परम तत्व हैं। कबीर के राम दशरथ-पुत्र की पौराणिक सीमा से आगे जाकर मनुष्य के भीतर स्थित सत्य का रूप ले लेते हैं। तुलसी की भक्ति श्रद्धा, शरणागति और मर्यादा पर आधारित है, जबकि कबीर की भक्ति आत्मबोध, पाखण्ड-विरोध और सामाजिक समानता पर आधारित है। प्रस्तुत शोध-पत्र में तुलसी और कबीर के राम का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि दोनों कवियों की राम-संकल्पना भिन्न होते हुए भी मनुष्य के आत्मिक उत्थान, प्रेम, करुणा और लोकमंगल की दिशा में कार्य करती है।

मुख्य शब्द

तुलसीदास, कबीर, राम, सगुण भक्ति, निर्गुण भक्ति, मर्यादा, आत्मानुभूति, भक्तिकाल, लोकधर्म, पाखण्ड-विरोध

1. प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल भारतीय समाज और संस्कृति के इतिहास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि इस काल में भक्ति केवल धार्मिक साधना न रहकर लोकचेतना, सामाजिक संवाद और आध्यात्मिक अनुभव का

माध्यम बन गई। इसी काल में तुलसीदास और कबीर जैसे महान कवियों ने ‘राम’ को अपनी काव्य-साधना का केन्द्र बनाया, परन्तु दोनों के राम का स्वरूप, अर्थ और प्रयोजन अलग-अलग है। तुलसी के यहाँ राम अयोध्या के राजकुमार, दशरथ-पुत्र, सीता-पति, भक्तवत्सल ईश्वर और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं; वे लोकमंगल के लिए अवतार लेते हैं और धर्म, नीति तथा आदर्श जीवन का प्रतिमान प्रस्तुत करते हैं। दूसरी ओर कबीर के यहाँ राम किसी विशेष कुल, कथा, मूर्ति या अवतार में सीमित नहीं हैं; वे निर्गुण, निराकार, घट-घट व्यापी और आत्मानुभूति के परम तत्व हैं। तुलसी का राम समाज को मर्यादा, धर्म और समन्वय की दिशा देता है, जबकि कबीर का राम मनुष्य को पाखण्ड, जाति-भेद, बाह्याडम्बर और धार्मिक संकीर्णता से मुक्त करके भीतर के सत्य की ओर ले जाता है। इसलिए तुलसी और कबीर दोनों को केवल रामभक्त कह देना पर्याप्त नहीं है; आवश्यक यह है कि उनके राम के दार्शनिक, सामाजिक, काव्यात्मक और आध्यात्मिक अन्तर को समझा जाए। इसी उद्देश्य से यह शोध-पत्र तुलसी के सगुण राम और कबीर के निर्गुण राम का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

2. पाठ-आधार और अध्ययन-पद्धति

2.1 पाठ-आधार

इस शोध-पत्र का आधार तुलसीदास की *रामचरितमानस*, *विनयपत्रिका* तथा कबीर की *कबीर ग्रंथावली* और *बीजक* की प्रमाणित पाठ-परम्परा है। तुलसी के राम को समझने के लिए मुख्यतः *रामचरितमानस* के बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और उत्तरकाण्ड के प्रसंगों को आधार बनाया गया है। कबीर के राम को समझने के लिए निर्गुण पदों, साखियों और उन पंक्तियों को लिया गया है जिनमें राम को निराकार, सर्वव्यापक और सामाजिक भेदों से परे माना गया है।

2.2 अध्ययन-पद्धति

इस अध्ययन में तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है। पहले तुलसी के राम का स्वरूप समझाया गया है, फिर कबीर के राम का विवेचन किया गया है। इसके बाद दोनों की राम-संकल्पना को सगुण-निर्गुण, साधना-पद्धति, सामाजिक दृष्टि, भाषा-शैली और काव्य-प्रयोजन के आधार पर तुलना में रखा गया है। साहित्यिक शोध होने के कारण यहाँ ‘वास्तविक आँकड़े’ का अर्थ मूल ग्रंथों के प्रमाणित उद्धरण, पाठ-प्रमाण और आलोचनात्मक साक्ष्य से है।

3. तुलसी के राम

3.1 सगुण और निर्गुण का समन्वय

तुलसीदास को सामान्यतः सगुण रामभक्ति का कवि कहा जाता है, परन्तु उनकी राम-स जाता है, परन्तंकल्पना केवल साकार रूप तक सीमित नहीं है। वे सगुण और निर्गुण को विरोधी नहीं मानते। उनके अनुसार परम ब्रह्म निर्गुण भी है और भक्त के प्रेम से सगुण भी हो जाता है। तुलसी के लिए राम का सगुण रूप भक्त के लिए सुलभ है, क्योंकि मनुष्य प्रेम, रूप, चरित्र और कथा के माध्यम से ईश्वर को अधिक निकट अनुभव करता है।

उद्धरण

“सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा।

गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।

अगुन अरूप अलख अज जोई।

भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।” [1]

यह पंक्ति तुलसी की समन्वयवादी दृष्टि को स्पष्ट करती है। तुलसी निर्गुण ब्रह्म को अस्वीकार नहीं करते, बल्कि कहते हैं कि वही निर्गुण ब्रह्म भक्त के प्रेम के कारण सगुण रूप ग्रहण करता है। इसलिए तुलसी के राम केवल मानवीय चरित्र नहीं हैं, बल्कि ब्रह्म के साकार रूप हैं।

उद्धरण

“राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना।

परमानन्द परेस पुराना।।” [2]

इस पंक्ति से स्पष्ट है कि तुलसी राम को केवल अयोध्या के राजा के रूप में नहीं, बल्कि व्यापक ब्रह्म के रूप में देखते हैं। यहाँ राम का स्वरूप लौकिक और अलौकिक दोनों है।

3.2 अवतारवाद और लोकमंगल

[1] गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, चौपाई “सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा”

[2] गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, “राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना”

तुलसी के राम अवतारी ईश्वर हैं। उनका जन्म सामान्य मनुष्य की तरह दिखाई देता है, परन्तु उसका उद्देश्य दिव्य और लोकमंगलकारी है। तुलसी के अनुसार राम का अवतार संतों, सज्जनों, धर्म और लोक के हित के लिए होता है। वे अधर्म का नाश करते हैं और धर्म की प्रतिष्ठा करते हैं।

उद्धरण

"बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।

निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥" [3]

इस दोहे में रामावतार का उद्देश्य स्पष्ट है। राम मनुष्य रूप धारण करते हैं, परन्तु वे माया और गुणों से परे हैं। उनका अवतार लोक की रक्षा और धर्म की स्थापना के लिए है। इस प्रकार तुलसी के राम भक्तों के रक्षक और धर्म के आधार हैं।

3.3 राम-नाम की महिमा

तुलसी के यहाँ राम-नाम का विशेष महत्व है। राम का नाम भक्त के जीवन में प्रकाश, शक्ति और मुक्ति का साधन है। तुलसी नाम को सगुण और निर्गुण के बीच सेतु मानते हैं। नाम के माध्यम से भक्त निर्गुण ब्रह्म को भी समझता है और सगुण राम से भी जुड़ता है।

उद्धरण

"राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।

तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर॥" [4]

इस दोहे में राम-नाम को मणि-दीप कहा गया है। तुलसी के अनुसार जो व्यक्ति भीतर और बाहर प्रकाश चाहता है, उसे राम-नाम का स्मरण करना चाहिए। यहाँ नाम आन्तरिक शुद्धि और आध्यात्मिक प्रकाश का माध्यम बन जाता है।

उद्धरण

"अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी।

[3] गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, दोहा 192

[4] गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, "राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार"

उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी॥" [5]

यहाँ तुलसी नाम को निर्गुण और सगुण के बीच साक्षी मानते हैं। नाम दोनों का ज्ञान कराने वाला माध्यम है। इससे स्पष्ट होता है कि तुलसी की भक्ति में नाम, रूप और ब्रह्म एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

3.4 मर्यादा पुरुषोत्तम की संकल्पना

तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे केवल ईश्वर नहीं, बल्कि आदर्श मनुष्य भी हैं। पिता की आज्ञा का पालन, भाई के प्रति प्रेम, पत्नी के प्रति निष्ठा, मित्रता में समर्पण, प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व और शत्रु के प्रति भी नीति—ये सब राम को मर्यादा का आदर्श बनाते हैं। तुलसी के राम जीवन को अनुशासन और धर्म का रूप देते हैं।

उद्धरण

"परहित सरिस धरम नहिं भाई।

पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥" [6]

यह पंक्ति तुलसी की धर्म-दृष्टि को स्पष्ट करती है। उनके लिए धर्म का सार परहित है और अधर्म का सार परपीड़ा। इसी दृष्टि से राम का चरित्र लोकमंगल का चरित्र बनता है।

3.5 भक्तवत्सल और करुणामय राम

तुलसी के राम भक्तवत्सल हैं। वे भक्त की जाति, अवस्था या सामाजिक स्थिति नहीं देखते, बल्कि उसके प्रेम और समर्पण को देखते हैं। शबरी, केवट, निषादराज, हनुमान और विभीषण जैसे पात्रों के माध्यम से तुलसी दिखाते हैं कि राम की दृष्टि में भाव की प्रधानता है।

उद्धरण

"मोहि भगत प्रिय संतत असि बिचारि सुनु काग।

कायँ बचन मन मम पद प्रेम अचल अनुराग॥" [7]

---

[5] गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, "अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी"

[6] गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, उत्तरकाण्ड, "परहित सरिस धरम नहिं भाई"

[7] गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, उत्तरकाण्ड;

इस पंक्ति में राम स्पष्ट करते हैं कि उन्हें भक्त प्रिय है। यहाँ भक्ति जाति, कुल या बाहरी सम्मान से ऊपर है। तुलसी के राम के लिए सच्चा सम्बन्ध प्रेम और श्रद्धा का है।

4. कबीर के राम

4.1 दशरथ-पुत्र से भिन्न राम

कबीर के राम तुलसी के राम से अलग हैं। कबीर के लिए राम केवल दशरथ-पुत्र नहीं हैं। वे उस राम की खोज करते हैं जो कथा, कुल, नगर और अवतार की सीमा से आगे है। कबीर के राम परम तत्व हैं, जिन्हें बाहरी रूप से नहीं, बल्कि भीतर की अनुभूति से जाना जाता है।

उद्धरण

"दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना॥" [8]

यहाँ कबीर स्पष्ट करते हैं कि दशरथ-पुत्र राम तीनों लोकों में प्रसिद्ध हैं, परन्तु राम-नाम का मर्म उससे भिन्न और गहरा है। कबीर का राम पौराणिक चरित्र से आगे जाकर आध्यात्मिक सत्य बन जाता है।

4.2 निर्गुण और निराकार राम

कबीर निर्गुण भक्ति के प्रमुख कवि हैं। उनके राम का कोई रूप, रंग, जाति, कुल या आकार नहीं है। वे निराकार और सर्वव्यापक हैं। कबीर का साधक इस राम को बाहरी कर्मकाण्ड से नहीं, बल्कि भीतर की साधना से पाता है।

उद्धरण

"निरगुण राम जपहु रे भाई।
अविगत की गति लखी न जाई॥" [9]

इस पंक्ति में कबीर निर्गुण राम का स्मरण करने की बात करते हैं। 'अविगत' का अर्थ है जिसे इन्द्रियों या सामान्य बुद्धि से पूरी तरह नहीं जाना जा सकता। कबीर के राम अनुभव के विषय हैं, बाहरी प्रदर्शन के नहीं।

---

[8] कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, संपा. श्यामसुन्दरदास, "दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना";
[9] कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, "निरगुण राम जपहु रे भाई";

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 1 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

4.3 घट-घट व्यापी राम

कबीर के राम किसी एक मंदिर, मस्जिद, तीर्थ या प्रतीक में सीमित नहीं हैं। वे सबमें हैं और सबके भीतर हैं। यही कारण है कि कबीर ईश्वर को बाहरी स्थानों में खोजने की अपेक्षा मनुष्य के भीतर खोजने की बात करते हैं।

उद्धरण

"खालिक खलक, खलक में खालिक,

सब घट रह्यो समाई॥" [10]

यह उद्धरण कबीर की सर्वव्यापक ईश्वर-दृष्टि को सामने रखता है। ईश्वर सृष्टि से बाहर कोई दूरस्थ सत्ता नहीं है, बल्कि वही सृष्टि के भीतर उपस्थित है। इसी कारण कबीर का राम हर मनुष्य में है।

4.4 पाखण्ड-विरोध और आंतरिक साधना

कबीर धर्म के बाहरी आडम्बर का विरोध करते हैं। उनके लिए सच्ची भक्ति मन, वचन और आचरण की सच्चाई में है। वे केवल माला फेरने, ग्रंथ पढ़ने या बाहरी पूजा करने को पर्याप्त नहीं मानते। यदि भीतर अहंकार और अज्ञान बना रहे, तो बाहरी साधना व्यर्थ है।

उद्धरण

"माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।

कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर॥" [11]

इस पंक्ति में कबीर बाहरी जप से अधिक आंतरिक परिवर्तन पर बल देते हैं। उनके लिए राम-साधना का अर्थ है मन का रूपान्तरण।

उद्धरण

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

---

[10] कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, "खालिक खलक, खलक में खालिक"

[11] कबीर, साखी-परम्परा, "माला फेरत जुग भया";

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥" [12]

यहाँ कबीर शुष्क पांडित्य की आलोचना करते हैं। वे बताते हैं कि केवल पुस्तकीय ज्ञान से सत्य नहीं मिलता; प्रेम और अनुभव ही वास्तविक ज्ञान का आधार हैं।

4.5 जाति-विरोध और सामाजिक समानता

कबीर के राम सामाजिक समानता के आधार हैं। यदि ईश्वर सबमें है, तो जाति, जन्म और बाहरी पहचान के आधार पर मनुष्य को ऊँचा-नीचा मानना असत्य है। कबीर का निर्गुण राम जाति-व्यवस्था को चुनौती देता है।

उद्धरण

"एक बूँद एक मल मूतर, एक चाम एक गूदा।

एक जाति थैं सब उपजा, कौन ब्राह्मन कौन सूदा॥" [13]

यह पंक्ति कबीर की सामाजिक चेतना को स्पष्ट करती है। कबीर मनुष्य की जैविक समानता के आधार पर जातिगत श्रेष्ठता का विरोध करते हैं।

उद्धरण

"जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥" [14]

यहाँ कबीर बाहरी पहचान की अपेक्षा ज्ञान और साधना को महत्त्व देते हैं। तलवार और म्यान का प्रतीक यह बताता है कि असली मूल्य भीतर की शक्ति का है, बाहरी आवरण का नहीं।

4.6 सांप्रदायिक भेद से ऊपर राम

---

[12] कबीर, साखी-परम्परा, "पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ";

[13] कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, "एक बूँद एक मल मूतर"

[14] कबीर, साखी-परम्परा, "जाति न पूछो साधु की"

कबीर के राम किसी एक धर्म या संप्रदाय के नहीं हैं। वे राम और रहीम, हरि और अल्लाह, साहब और गोविन्द जैसे नामों में एक ही सत्य देखते हैं। इस दृष्टि से कबीर की राम-संकल्पना धार्मिक समन्वय और मानवीय एकता की दिशा देती है।

उद्धरण

"कहैं कबीर एक राम जपहु रे,

हिंदू तुरक न कोई॥" [15]

इस पंक्ति में कबीर स्पष्ट करते हैं कि राम का सत्य हिंदू-मुसलमान के भेद से ऊपर है। उनका राम मनुष्य को विभाजन से नहीं, एकता से जोड़ता है।

5. तुलसी और कबीर के राम में तुलनात्मक अन्तर

5.1 स्वरूपगत अन्तर

तुलसी और कबीर के राम में पहला मूल अन्तर स्वरूप का है। तुलसी के राम सगुण-साकार हैं। वे कथा में जन्म लेते हैं, बाललीला करते हैं, वन जाते हैं, रावण का वध करते हैं और रामराज्य की स्थापना करते हैं। उनके राम भक्त के लिए देखने, सुनने, गाने और स्मरण करने योग्य चरित्र हैं। दूसरी ओर कबीर के राम निर्गुण और निराकार हैं। वे किसी विशेष कथा या अवतार में सीमित नहीं होते। वे साधक के भीतर स्थित परम तत्व हैं। इसलिए तुलसी का राम कथा और चरित्र में मिलता है, जबकि कबीर का राम अनुभूति और आत्मबोध में मिलता है।

5.2 साधना-पद्धति का अन्तर

तुलसी की साधना श्रद्धा, समर्पण, विनय, नाम-स्मरण और रामकथा के श्रवण पर आधारित है। तुलसी का भक्त राम के चरणों में शरण लेता है और उनके आदर्श को जीवन में उतारने का प्रयास करता है। कबीर की साधना आत्मपरीक्षण, गुरु, नाम-स्मरण और भीतर के जागरण पर आधारित है। कबीर का साधक बाहर की अपेक्षा भीतर उतरता है और अपने मन के भ्रम को दूर करता है। इस प्रकार तुलसी की साधना भक्तिपूर्ण शरणागति की है और कबीर की साधना आत्मबोध की है।

---

[15] कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, "कहैं कबीर एक राम जपहु रे"

5.3 सामाजिक दृष्टि का अन्तर

तुलसी का राम समाज को मर्यादा, धर्म और लोकमंगल की दिशा देता है। उनके राम परिवार, समाज और राज्य के आदर्श स्थापित करते हैं। तुलसी की दृष्टि में धर्म समाज को व्यवस्थित और नैतिक बनाता है। कबीर का राम सामाजिक विद्रोह और समानता का आधार है। कबीर जाति, पाखण्ड, धार्मिक विभाजन और बाहरी श्रेष्ठता को चुनौती देते हैं। तुलसी समाज को मर्यादा से जोड़ते हैं, जबकि कबीर समाज को आत्मसत्य और समानता के प्रश्न से झकझोरते हैं।

5.4 भाषा और शैली का अन्तर

तुलसी की भाषा अवधी की मधुरता, कथा-विस्तार और छन्द-सौन्दर्य से युक्त है। वे दोहा, चौपाई, सोरठा और छन्द के माध्यम से रामकथा को महाकाव्यात्मक स्वर देते हैं। कबीर की भाषा सधुक्कड़ी, लोकवाणी और प्रत्यक्ष अनुभव की भाषा है। उनकी पंक्तियाँ छोटी, तीखी और प्रहारात्मक हैं। तुलसी कथा कहकर मन को भक्ति में ले जाते हैं, जबकि कबीर सीधी चोट करके मन को जगाते हैं। तुलसी की भाषा करुणा और मर्यादा की भाषा है; कबीर की भाषा प्रश्न और जागरण की भाषा है।

5.5 धर्म-दृष्टि का अन्तर

तुलसी धर्म को मर्यादा, नीति, शरणागति और लोकमंगल से जोड़ते हैं। वे परम्परा के भीतर रहकर समन्वय करते हैं। उनके लिए धर्म सामाजिक संतुलन और आध्यात्मिक उन्नति का आधार है। कबीर धर्म को आंतरिक सत्य, प्रेम और अनुभव से जोड़ते हैं। वे बाहरी कर्मकाण्ड, पांडित्य और धार्मिक अहंकार की आलोचना करते हैं। इस प्रकार तुलसी का धर्म मर्यादित जीवन का आधार है, जबकि कबीर का धर्म आंतरिक सत्य का अनुभव है।

6. तुलसी और कबीर में समानताएँ

6.1 राम-नाम की महिमा

तुलसी और कबीर दोनों राम-नाम को साधना का आधार मानते हैं। तुलसी के लिए राम-नाम भक्त को भीतर-बाहर प्रकाश देता है, जबकि कबीर के लिए राम-नाम आत्मबोध और भीतर के परिवर्तन का माध्यम है। दोनों की दृष्टि अलग है, पर नाम-स्मरण दोनों की भक्ति में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

6.2 लोकभाषा का प्रयोग

दोनों कवियों ने लोकभाषा में काव्य रचा। तुलसी ने अवधी में रामकथा को जन-जन तक पहुँचाया और कबीर ने लोकवाणी में निर्गुण सत्य को व्यक्त किया। इससे भक्ति संस्कृत या शास्त्रीय भाषा तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामान्य जनता तक पहुँची।

6.3 मनुष्य के आत्मिक उत्थान की चिंता

तुलसी और कबीर दोनों मनुष्य को लोभ, मोह, अहंकार और अज्ञान से मुक्त करना चाहते हैं। तुलसी मर्यादा और समर्पण से मनुष्य को उन्नत करते हैं। कबीर सत्य और आत्मानुभूति से मनुष्य को जगाते हैं। दोनों का लक्ष्य मनुष्य के भीतर की शुद्धि है।

6.4 प्रेम और करुणा का आधार

तुलसी के राम करुणामय और भक्तवत्सल हैं। कबीर का राम सबमें स्थित है, इसलिए सबके प्रति प्रेम आवश्यक है। दोनों कवियों के यहाँ प्रेम भक्ति का मूल तत्व है। तुलसी का प्रेम भक्त और भगवान के संबंध में है, जबकि कबीर का प्रेम साधक और परम सत्य के मिलन में है।

7. आलोचनात्मक विवेचन

7.1 तुलसी की राम-संकल्पना का मूल्यांकन

तुलसी की राम-संकल्पना भारतीय लोकजीवन को नैतिक आधार देती है। उनके राम मर्यादा, धर्म, नीति, करुणा और लोकमंगल के प्रतीक हैं। राम का चरित्र व्यक्ति, परिवार, समाज और राज्य सभी के लिए आदर्श बनता है। तुलसी ने राम को केवल मंदिर का देवता नहीं रहने दिया, बल्कि लोकजीवन का नैतिक केन्द्र बना दिया। यही कारण है कि *रामचरितमानस* भारतीय समाज की सांस्कृतिक स्मृति का महत्वपूर्ण ग्रंथ बन गया।

7.2 कबीर की राम-संकल्पना का मूल्यांकन

कबीर की राम-संकल्पना अत्यन्त क्रांतिकारी है। वे ईश्वर को किसी मूर्ति, जाति, धर्म या ग्रंथ की सीमा में नहीं बाँधते। उनका राम सबमें है और सबका है। कबीर का निर्गुण राम मनुष्य को बाहरी आडम्बर से मुक्त करता है और भीतर के सत्य तक ले जाता है। उनकी रामभक्ति सामाजिक आलोचना भी है, क्योंकि वह जाति, पाखण्ड और सांप्रदायिक विभाजन को चुनौती देती है।

7.3 दोनों दृष्टियों की आवश्यकता

तुलसी और कबीर को केवल विरोधी रूप में देखना उचित नहीं है। तुलसी समाज को मर्यादा और नैतिक आदर्श देते हैं, जबकि कबीर समाज को आत्मबोध और प्रश्न करने की शक्ति देते हैं। तुलसी का राम जीवन को अनुशासन देता है और कबीर का राम जीवन को आंतरिक स्वतंत्रता देता है। एक रूप का मार्ग है, दूसरा अरूप का; एक कथा का मार्ग है, दूसरा अनुभव का। दोनों मिलकर हिन्दी भक्ति-साहित्य की व्यापकता को सिद्ध करते हैं।

8. निष्कर्ष

तुलसी के राम और कबीर के राम में मूल अन्तर सगुण और निर्गुण, रूप और अरूप, अवतार और परम तत्व, मर्यादा और अनुभूति, कथा और साखी, समन्वय और विद्रोह के रूप में दिखाई देता है। तुलसी के राम सगुण-साकार, अवतारी, भक्तवत्सल और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे लोकमंगल के लिए अवतरित होते हैं और समाज को धर्म, करुणा, नीति तथा आदर्श जीवन का मार्ग दिखाते हैं। तुलसी का राम चरित्र और कथा के माध्यम से भक्त के निकट आता है। इसके विपरीत कबीर का राम निर्गुण, निराकार, घट-घट व्यापी और आत्मानुभूति का प्रतीक है। वह दशरथ-पुत्र की सीमा से आगे जाकर मनुष्य के भीतर स्थित परम सत्य बन जाता है। कबीर के राम जाति, धर्म, मंदिर, मस्जिद और बाहरी पाखण्ड से परे हैं। वे मनुष्य को भीतर से बदलने, समानता स्वीकार करने और प्रेम को वास्तविक ज्ञान मानने की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार तुलसी और कबीर की राम-संकल्पनाएँ अलग होते हुए भी एक-दूसरे की पूरक हैं। तुलसी का राम समाज को मर्यादा देता है और कबीर का राम व्यक्ति को आत्मिक स्वतंत्रता देता है। तुलसी का राम लोकधर्म का आधार है और कबीर का राम आत्मसत्य का आधार। इसलिए दोनों कवियों के राम भारतीय भक्ति-चेतना के दो अनिवार्य आयाम हैं।

पाद-टिप्पणियाँ

- गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, चौपाई "सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा"; यह चौपाई सगुण और निर्गुण के समन्वय को स्पष्ट करती है।
- गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, "राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना"; इस पंक्ति में राम को व्यापक ब्रह्म के रूप में स्वीकार किया गया है।
- गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, दोहा 192; इसमें रामावतार का लोकमंगलकारी उद्देश्य बताया गया है।
- गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, "राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार"; यह दोहा राम-नाम की महिमा को स्पष्ट करता है।

- गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, बालकाण्ड, "अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी"; इसमें राम-नाम को सगुण और निर्गुण के बीच सेतु कहा गया है।
- गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, उत्तरकाण्ड, "परहित सरिस धरम नहिं भाई"; यह पंक्ति तुलसी की परहित-प्रधान धर्म-दृष्टि को व्यक्त करती है।
- गोस्वामी तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, उत्तरकाण्ड; इस प्रसंग में राम की भक्तवत्सलता और भक्त-प्रेम की महिमा व्यक्त हुई है।
- कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, संपा. श्यामसुन्दरदास, "दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना"; यह पंक्ति कबीर के राम और पौराणिक राम के अन्तर को स्पष्ट करती है।
- कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, "निरगुण राम जपहु रे भाई"; यह पद कबीर की निर्गुण राम-साधना का प्रमुख उदाहरण है।
- कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, "खालिक खलक, खलक में खालिक"; यह पंक्ति ईश्वर की सर्वव्यापकता और घट-घट उपस्थिति को व्यक्त करती है।
- कबीर, साखी-परम्परा, "माला फेरत जुग भया"; यह दोहा बाहरी जप की अपेक्षा मन के परिवर्तन को महत्त्व देता है।
- कबीर, साखी-परम्परा, "पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ"; यह दोहा पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा प्रेम को वास्तविक ज्ञान मानता है।
- कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, "एक बूँद एक मल मूतर"; यह पंक्ति जातिगत भेदभाव के विरुद्ध कबीर की सामाजिक चेतना को प्रकट करती है।
- कबीर, साखी-परम्परा, "जाति न पूछो साधु की"; यह दोहा बाहरी जाति की अपेक्षा ज्ञान को महत्त्व देता है।
- कबीर, *कबीर ग्रंथावली*, "कहैं कबीर एक राम जपहु रे"; यह पंक्ति राम को हिंदू-मुसलमान के भेद से ऊपर रखती है।

संदर्भ-सूची

1. तुलसीदास। *श्रीरामचरितमानस*। गोरखपुर: गीताप्रेस।
2. तुलसीदास। *विनयपत्रिका*। विभिन्न प्रामाणिक संस्करण।

3. कबीर। *कबीर ग्रंथावली*। सम्पादन: श्यामसुन्दरदास।
4. कबीर। *बीजक*। विभिन्न प्रामाणिक संस्करण।
5. द्विवेदी, हजारी प्रसाद। *कबीर*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. शुक्ल, रामचन्द्र। *हिन्दी साहित्य का इतिहास*। वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
7. वर्मा, रामकुमार। *हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास*। प्रयाग: लोकभारती प्रकाशन।
8. सिंह, नामवर। *भक्ति आन्दोलन और हिन्दी साहित्य*। विभिन्न संस्करण।
9. मिश्र, विद्यानिवास। *तुलसीदास और उनका काव्य*। विभिन्न संस्करण।
10. सिंह, बच्चन। *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास*। नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।